Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

# 'हरिऔध' की भाषा के विविध रूप

**Parveen Devi***

M.A., M.Phil., Net, M.D.U., Rohtak, Haryana

***सार –*** *हरिऔध जी ने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में ही रचना की है, किंतु उनकी अधिकांश रचनाएँ खड़ी बोली में ही हैं। हरिऔध की भाषा प्रौढ़, प्रांजल और आकर्षक है। कहीं-कहीं उसमें उर्दू-फारसी के भी शब्द आ गए हैं। नवीन और अप्रचलित शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। संस्कृत के तत्सम शब्दों की तो इतनी अधिकता है कि उनकी रचनाएँ हिन्दी की बजाय संस्कृत की रचनाएँ जान पड़ती हैं। एक ओर जहाँ उन्होंने संस्कृत गर्भित उच्च साहित्यिक भाषा में रचनाएँ लिखी वहीं दूसरी ओर सरल तथा मुहावरेदार व्यवहारिक भाषा को भी सफलतापूर्वक अपनाया। हरिऔध जी ने गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में हिन्दी की सेवा की। ये द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हैं। इन्होंने सर्वप्रथम खड़ी बोली में काव्यरचना करके यह सिद्ध कर दिया कि ब्रजभाषा के अलावा हिन्दी भाषा में भी काव्य रचना की जा सकती है। हरिऔध की भाषा में हम विविध भाषाओं की झलक देखते हैं जो अन्य किसी रचनाकार की रचनाओं में हमें बहुत कम देखने को मिलती है।*

***कुंजी शब्द:*** *ब्रजभाषा, खड़ी बोली, तत्सम, मुहावरेदार व्यवहारिक, साहित्यिक आदि।*

----------X----------

**प्रस्तावना:-**

**विषयवस्तु:**

'हरिऔध' आरम्भ में ब्रजभाषा में लिखते थे। 'रसकलश' का अधिकांश भाग उस समय का है जब 'हरिऔध' ब्रजभाषा के कवि थे। हरिऔध ने इस ग्रंथ के द्वारा ब्रजभाषा के आचार्यों की परम्परा में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। 'रसकलश' में इनकी ब्रजभाषा के उदाहरण देखिए-

**भोर भये पै पधारे, कहा भयौ, मेरी सदा सुख ही की घरी है।**

**ऐरी कहू 'हरिऔध' करै, हमें तो उनकी प्रतीत खरी है।**

**बूझ विचार कहै किन बावरी बिचई में कत जारी मरी है।**

**साँवरे प्रेम पसीज परी नहि मों आखियाँ अँसुआन भरी है।[1]**

हिन्दी साहित्य में खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य लिखकर हरिऔध ने कीर्तिमान स्थापित किया और खड़ी बोले के महाकवि कहलाए। उन्होंने 'प्रियप्रवास' मंे संस्कृत गर्भित साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। इसका एक उदाहरण देखिए -

**जिस प्रिय वर को खो ग्राम सूना हुआ है।**

**सदन सदन में हा। छा गई उदासी।**

**तम वलित मही में है न होता उजाला।**

**वह निपट निराली कान्तिवाला कहाँ है।।[2]**

खड़ी बोली का एक और उदाहरण देखिए -

**सारी बातें व्यथित उर की भूल के नंद बोले।**

**हाँ आवेगा व्यथित प्रिय सुत प्रिये गेह दो ही दिनों में।**

**ऐसी बातें कथन कितनी और भी नन्द ने की।**

**जैसे-जैसे हरि जननी को धीरता से प्रबोध।।[3]**

'वैदेही बनवास' में हरिऔध ने सरल तथा लोकप्रचलित भाषा का प्रयोग किया है। एक उदाहरण देखिए -

**सर-सरिता का सलिल सुचारू बना लहराया।**

**बिन्दु निचय ने रवि के कर से मोती पाया।[4]**

www.ignited.in

**उठ उठकर नाचने लगी बहु तरल तरंगे।**

**दिव्य बन गई वरूण देव की विपुल उमंगें।।**

हरिऔध की भाषा में लयात्मकता विद्यमान है। गहरी से गहरी बात को अभिव्यक्त करने का उनका तरीका अलग ही बन पड़ता है -

**मैं घमण्डों में भरा ऐंठा हुआ।**

**एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा।**

**आ अचानक दूर से उड़ता हुआ।**

**एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।।[5]**

'हरिऔध' ने कुछ बाल कविताएँ भी लिखी हैं जिसमें कवि ने बिल्कुल ही स्पष्ट और सरल भाषा का प्रयोग किया है। एक उदाहरण देखिए -

**क्या चमकीले तारे,**

**बड़े अनूठे, प्यारे।**

**आँखों में बस जाते हैं,**

**जी को बहुत लुभाते हैं।**

**जगमग जगमग करते हैं,**

**हँस हँस मन को हरते हैं।[6]**

संस्कृत गर्भित भाषा का एक उदाहरण प्रिय प्रवास में देखिए -

**रूपोधाम प्रफुल्ल प्रायः कलिका राकेंदु बिबानना,**

**तन्वगी कल हासिनी सुरसि का क्रीडा-कला पुतली।**

**शोभा बारिधि की अमूल्य मणि-सी लावण्य लीलामयी,**

**श्री राधा मृदु भाषिणा मृगदगी-माधुर्य की मूर्ति थी।।[7]**

उनके चैपदों की भाषा का एक उदाहरण देखिए -

**नहीं मिलते आँखों वाले, पड़ा अंधेरे से है पाला।**

**कलेजा किसने कब थामा, देख छिलते दिल का छाला।।**

## रस छंद और अलंकार

हरिऔध जी के काव्य में प्रायः सभी रस पाए जाते हैं। करूण, वियोग, शृंगार और वात्सल्य रस की व्यंजना उनकी रचनाओं में अधिकतर मिलती है। हरिऔध जी की छंद योजना में विविधता मिलती है। आरंभ में उन्होंने हिन्दी के प्राचीन छंद कवित्त, सवैया, छप्पय, पोहा आदि तथा उर्दू के छंदों का प्रयोग किया। बाद में इन्होंने इंद्रबज्रा, मालिनी, बसंत तिलका, शार्दूल विक्रिड़ित, मंदाक्राता आदि संस्कृत के छंदों को भी अपनाया। रीतिकालीन प्रभाव के कारण हरिऔध जी अलंकार प्रिय हैं। परन्तु उनकी कविता अलंकारों से बोझिल नहीं है। उनकी कविताओं में अलंकारों का सहज प्रयोग मिलता है।

हरिऔध जी के काव्य में मुख्य रूप से शृंगार और वात्सल्य रस की अभिव्यक्ति हुई है। 'रसकलश' में शृंगार रस का विस्तार से विवेचन हुआ है। इसमें संयोग शृंगार के बड़े ही सुन्दर चित्र मिलते हैं। इसमें वासना की गंध नहीं है। एक गोपी कहती है -

**''मंद मंद समंद की सी चालन सों,**

**ग्वालन लै लालन हमारी गली आइयो।''[8]**

इन्होंने शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का सफल प्रयोग किया है। यमक, श्लेष, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, प्रतीप, व्यतिरेक, विभावना आदि हरिऔध जी के प्रिय अलंकार हैं। इनकी नजर में अलंकारों का आश्रय कल्पना की उड़ान नहीं थी बल्कि सर्वत्र इसका सीधा-सादा प्रयोग करना था। एक रूपक का उदाहरण देखिए -

**''ऊधो मेरा हृदय तल था एक उद्यान न्यारा।**

**शोभा देती अमित उसमें कल्पना क्यारियाँ थी!**

**प्यारे-प्यारे कुसुम कितने भाव के थे अनेकों।**

**उसके विपुल विटपी मुग्धकारी महा थे।!**

## निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य में दीर्घ विकास काल में 'हरिऔध' का प्रतिभावान व्यक्तित्व आकृष्ट करता है। उनकी यह प्रतिभा भाषा के विविध रूपों के प्रयोग में प्रतिफलित हुई है। हरिऔध ने संस्कृत फारसी, अरबी, गुरुमुखी और हिन्दी भाषा का अध्ययन किया था। केवल अध्ययन ही नहीं, इन भाषाओं का उन्होंने पूर्णरूप से मनन किया था और उनका इन सभी

www.ignited.in

भाषाओं पर समान अधिकार था। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में वह पीढ़ी अब पूर्ण समाप्त प्रायः हो रही है जिसे इस प्रकार से अनेक भाषाओं का ज्ञान रहा हो। 'हरिऔध' ने इन भाषाओं के ज्ञान से अनेक प्रकार का लाभ उठाया। संस्कृत भाषा के गहन अध्ययन के फलस्वरूप उनके काव्यों की भाषा में विशिष्टता विद्यमान है। इस भाषा पर पूर्ण अधिकार होने के कारण ही वे हिन्दी खड़ी बोली के महाकवि हो सके। बोल-चाल संबंधी उनकी मुहावरेदार रचनाएँ उनके फारसी और अरबी अध्ययन और लोकचेतना के ज्ञान का परिणाम है। इस प्रकार उनकी रचनाओं मंे भाषा के विविध रूप देखने को मिलते हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हरिऔध, रसकलश, काव्य
2. हरिऔध, प्रियप्रवास, महाकाव्य
3. हरिऔध, प्रियप्रवास, महाकाव्य
4. हरिऔध, वैदेही बनवास, महाकाव्य
5. हरिऔध, एक तिनका, कविता
6. हरिऔध, चमकीले तारे, बाल कविता
7. हरिऔध, प्रियप्रवास, महाकाव्य
8. हरिऔध का रसकलश

**Corresponding Author**

**Parveen Devi***

M.A., M.Phil., Net, M.D.U., Rohtak, Haryana